06/08/2020

General Psychology

Paper I

B.A. I (Honours)

व्यक्तित्व का अर्थ एवं स्वरुप।

Meaning and Nature of Personality.

(… continued)

यदि हम व्यक्तित्व के उपर्युक्त परिभाषा पर ध्यान दें तो यह स्पष्ट होगा कि इसमें निम्नांकित तीन बातें महत्वपूर्ण हैं जिसमें व्यक्तित्व का स्वरुप स्पष्ट होता है।

1. **मनोशारीरिक तंत्र (Psychophysical System) –**
   इस परिभषा की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्तित्व एक ऐसा तंत्र होता है जिसमें मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही पक्ष होते हैं। इस तंत्र में ऐसे तत्व होते हैं जो आपस में अन्तःक्रिया (interaction) करते हैं। इस तंत्र के मुख्य तत्व शीलगुण (trait), संवेग (emotion), आदत (habit), ज्ञानशक्ति (intellect), चित्रप्रकृति (temprament) आदि है जो सभी मानसिक या मनोवैज्ञानिक पक्ष के हैं तथा इनका आधार शारीरिक (physical) अर्थार्थ व्यक्ति की ग्रन्थीय प्रक्रियाएँ तथा तंत्रकीय प्रक्रियाएँ (neural processes) होती हैं। इसका मतलब यह हुआ कि व्यक्तित्व न तो पूर्णतः मनोवैज्ञानिक होता है और ना ही पूर्णतः शारीरिक। इसमें दोनों तरह के पक्षों का एक समन्वय (integration) न की योग (sum) होता है। दूसरे शब्दों में विभिन्न गुण परस्पर संबद्ध होकर एक व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

2. **गत्यात्मक संगठन (Dynamic Organisation) –**
   व्यक्तित्व में विभिन्न गुणों का एक संगठन पाया जाता है। परन्तु इससे यह अर्थ नहीं निकालना चाहिए की इसके गुण हमेशा के लिए स्थिर होते हैं। सच्चाई यह है कि वे परिस्थिति और समय के अनुरूप परिवर्तित भी होते रहते हैं। शायद यही कारण है कि एक व्यक्ति एक परिस्थिति में अधिक ईमानदार और समयनिष्ठ (punctual) होता है तो दूसरी परिस्थिति में वही आदमी बईमान तथा लापरवाह होता है।

3. **<u>वातावरण में अपूर्व समायोजन (Unique Adjustment to Environment) –</u>**
प्रत्येक व्यक्ति में विभिन्न गुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन होता है जिसमें उसका व्यवहार वातावरण में अपने ढंग का अपूर्व (unique) होता है। इस अपूर्वता के कारण वातावरण समान होने पर भी व्यक्तियों के सोंचने का ढंग, अनुक्रिया करने का तरीका, संवेग, भाव आदि में विभिन्नता पायी जाती है। इस विभिन्नता के कारण वातावरण के साथ समायोजन करने का ढंग भी प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग होता है। जैसे - घर में आग लग जाने पर परिवार का कोई सदस्य मात्र रोता है, कोई चिल्ला-चिल्ला कर पास-पड़ोस के व्यक्तियों को बुलाता है तो कोई किंकर्त्तव्यविमूढ़ (disinterested) हो कर खड़ा रहता है। ऐसा इस लिए होता है कि प्रत्येक व्यक्ति के मनोशारीरिक गुणों में विभिन्नता होने के कारण वातावरण के साथ समायोजन करने की क्षमता में भी अपूर्वता (uniqueness) उत्पन्न हो जाती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व भिन्न-भिन्न शीलगुणों, चित्रप्रकृति, प्रेरणा आदि का एक गत्यात्मक संगठन होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार प्रत्येक वातावरण में अपने ढंग का अर्थार्थ अपूर्व होता है।

Dr. Hena Hussain

Assistant Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com